B.A. III
V paper

चम्पा के धार्मिक जीवन

Religious life of champa.

चम्पा का धार्मिक जीवन भारतीय परम्परा के आधार पर आधारित था। चौथी शताब्दी में चम्पा में बौद्ध धर्म का प्रवेश हो चुका था। यहाँ पर वैदिक-धार्मिक परम्परा और यज्ञ इत्यादि को स्थान न मिला क्योंकि इससे वे लोग अनभिज्ञ थे। ब्राह्मण धर्म में भी शैवमत ने चम्पा के धार्मिक इतिहास में सर्वदेव मान्यता और प्रमुख स्थान प्राप्त किया, शिव के अतिरिक्त विष्णु ब्रह्मा इत्यादि धर्म अपना स्थान बना लिया। चम्पा के धार्मिक जीवन के प्रमुख अंगों में शिव, विष्णु, ब्रह्मा और त्रिमूर्ति, ब्राह्मण मत से सम्बन्धित एवं अन्य देवी-देवताओं तथा बौद्ध धर्म पर प्रकाश डाला जा सकता है।

शैव धर्म →

कम्बुज देश के समान चम्पा में भी पौराणिक धर्म के शैव सम्प्रदाय का सबसे अधिक प्रचार था। चम्पा में तीन ऐसे स्थान हैं, जहाँ बहुत से प्राचीन मंदिर हैं। इनमें दो ऐसे हैं जहाँ शिव मन्दिरों का समूह है। ये स्थान माइसोन और पो-नगर है। चम्पा में शिवलिंगों को प्रतिष्ठापित करना और उनके लिए दान देना पुण्य कार्य समझा जाता था। राजाओं के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति भी शिव-मन्दिरों के निर्माण तथा उनमें शिवलिंगों की स्थापना के लिए तत्पर रहते थे।

यद्यपि शिव की पूजा के लिए मुख्यत: लिंग का ही आश्रय लिया जाता था पर मानव के रूप में शिव की मूर्तियाँ बनाकर मन्दिरों में उन्हें प्रतिष्ठापित करने की पद्धति भी चम्पा में विद्यमान थी। मानव के रूप में शिव की जो मूर्तियाँ चम्पा से प्राप्त हुई हैं उनके सिर पर मुकुट है और जटाएँ कन्धे पर फैली हुई हैं साँप उनके कण्ठ में लिपटे हुए हैं। शिव की मानवाकार मूर्तियाँ बैठी हुई और खड़ी हुई बनायी गई हैं। एक मूर्ति में शिव को ताण्डव नृत्य करते हुए भी प्रदर्शित किया गया है। शिव का वाहन नन्दी को माना जाता है। मन्दिरों के प्रवेशद्वारों तथा आँगनों से नन्दी की भी मूर्तियां चम्पा में मिली हैं।

वैष्णव धर्म → शिव सम्प्रदाय के साथ-ही साथ

Scanned with CamScanner

वैष्णव सम्प्रदाय की भी चम्पा में प्रचलन था। चम्पा के अभिलेखों में नारायण, पुरुषोत्तम, हरि, गोविन्द, माधव आदि अनेक नामों से विष्णु का उल्लेख किया गया है। अनेक राजाओं के शौर्य को प्रदर्शित करने के लिए विष्णु से उनकी उपमा दी गई है। 799 ई० में उत्कीर्ण इन्द्रवर्मा प्रथम के अभिलेख में राजा के सम्बन्ध में यह कहा गया है कि उसने विष्णु के समान अपनी शक्ति द्वारा शत्रुओं का विनाश किया था। चम्पा में विष्णु के अवतार के रूप में राम और कृष्ण की भी पूजा किया जाता था।

चम्पा में विष्णु की भी अनेक मूर्तियां मिली हैं। एक मूर्ति में भगवान विष्णु पद्मासन लगाए बैठे हैं। उनके चार हाथों में पद्म, चक्र, शंख और गदा है। कुछ मूर्तियों में वे गरुड़ पर आसीन हैं और कुछ में अनन्तनाग पर लेटकर विश्राम करते हैं। उनकी नाभि से कमल निकला है। जिस प्रकार शिव की शक्ति देवी या उमा माना गया है वैसे ही विष्णु की शक्ति लक्ष्मी। लक्ष्मी की भी अनेक मूर्तियाँ चम्पा में उपलब्ध हुई हैं।

ब्रह्मा →

पौराणिक हिन्दू धर्म में जिन तीन देवों की त्रिमूर्ति की उपासना की जाती है उनमें शिव और विष्णु के अतिरिक्त तीसरे देव ब्रह्मा हैं। चतुर्मुख तथा स्वयंभुव के नाम से चम्पा के अभिलेखों में इनका उल्लेख है। राजा भद्रवर्मा के अभिलेख में महेश्वर, उमा और विष्णु के साथ ब्रह्मा को भी नमस्कार किया गया है। ब्रह्मा की मूर्तियों को भी चम्पा में प्रतिष्ठापित किया गया था यही कारण है कि वहाँ कुलदेव की अनेक मूर्तियां उपलब्ध हुई हैं।

अन्य देवी--देवता →

शिव, विष्णु और ब्रह्मा के अतिरिक्त बहुत से पौराणिक देवी-देवताओं की पूजा चम्पा में प्रचलित थी और उनकी मूर्तियों को वहाँ के मन्दिरों में प्रतिष्ठापित किया जाता था। देवी-देवताओं में इन्द्र, कुबेर, वासुकि, वरुण, सूर्य, चन्द्र और पृथिवी प्रधान थे। इन्द्र देवता का उल्लेख अनेक अभिलेखों में पाया जाता है। चम्पा में इन्द्र की दो मूर्तियां मिली हैं जिनके साथ ऐरावत हाथी भी बनाया गया है। यम की भी

Scanned with CamScanner

चम्पा के अभिलेखों में "धर्मराज" शब्द का प्रयोग किया गया है। और कुबेर के लिए धनद का।

चम्पा के अभिलेखों में स्वर्ग और नरक, लोक व परलोक आदि के भी विचार प्रचलित थे ये चम्पा में विद्यमान थे।

बौद्ध धर्म :—

चम्पा में पौराणिक हिन्दू धर्म के साथ बौद्ध धर्म का भी प्रचलन था। सम्भवतः शुरू में बौद्ध धर्म ही अधिक प्रचलित था। 7वीं शती में चीन के सेनापति ने जब चम्पा पर किया था तो वहाँ से बौद्ध ग्रन्थ को लूटकर चीन ले गया था। ग्रन्थों की संख्या 1350 थी। प्रसिद्ध चीनी यात्री इ-त्सिंग 7वीं शती के अन्त में चम्पा आया था उसने विवरण में लिखा है कि चम्पा में बौद्ध धर्म का प्रचार 7वीं शती में हो चुका था। माइसोन और पो-नगर में पौराणिक हिन्दू मन्दिर बड़ी संख्या में विद्यमान हैं। वहाँ से बुद्ध तथा बोधिसत्वों आदि की मूर्तियाँ भी काफी संख्या में उपलब्ध हुई हैं। बुद्ध के अतिरिक्त अवलोकितेश्वर बोधिसत्व तथा प्रज्ञापारमिता आदि की बौद्ध मूर्तियाँ भी चम्पा से मिली हैं। बुद्ध की कुछ मूर्तियों पर धर्मचक्रप्रवर्तन, बुद्ध की अभयमुद्रा आदि भी अंकित हैं।

चम्पा के धार्मिक जीवन में उदारता और सद्भावना की भावनाओं ने समस्त धार्मिक प्रवृत्तियों का स्थान प्राप्त था। वहाँ के राजाओं द्वारा स्वयं हिन्दू से विभिन्न धर्मों के लिए दान देना तथा मन्दिरों की स्थापना की। चम्पा के मन्दिर और विहार पूर्णतया सम्पन्न थे और उन्हें सार्वजनिक, राजकीय तथा अन्य स्रोतों से धन, भूमि, दास, पशु इत्यादि का दान मिलता था। और वे राजनीतिक अस्थिरता के समय में भी अपना धार्मिक कृत्य कुशल रूप से करते रहे।